International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 8 Ser. III || August 2021 || PP 47-52

बाल पत्रिकाओं का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ रचना प्रसाद
रीडर, समाजशास्त्र विभाग, विद्यावती मुकुंदलाल महिला महाविद्यालय, गाजियाबाद
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

सारांश

विद्यार्थी के कोमल बाल सुलभ मन की असीम जिज्ञासाओं ने उसे बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान किया है। बचपन में प्रकृति से परिचित होते ही वह उसे पूरी तरह जानने को आतुर हो उठता है। यही आतुरता उसके अंदर पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है। यह नैसर्गिक आतुरता उसके ज्ञान प्राप्ति के प्रति आकर्षण को बढ़ाने में मदद करती है। विविधताओं से परिपूर्ण बाल पत्रिकाएँ स्वाभाविक रूप से उसमें पढ़ने की आदत का विकास करती हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पढ़ने की आदत पर बाल पत्रिकाओं के प्रभाव को प्रस्तुत शोध द्वारा जानने का प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन के अनुसार हाई स्कूल स्तर पर साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग से ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत का विकास होता है व शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है।

Date of Submission: 16-08-2021 Date of Acceptance: 31-08-2021

प्रस्तावना (Introduction) -

बाल सुलभ मन नितांत सरल, निश्छल और सतत् आनन्द की खोज में रहता है। बाल्यावस्था में रंग-बिरंगे चित्र, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे और प्रकृति की रचना, उनकी उत्पत्ति की गाथाएँ, परीलोक की कहानियाँ, खेल, विज्ञान और सम्पूर्ण क्रिया-कलाप बच्चों की जिज्ञासाओं और उनकी कल्पनाओं की दुनिया होती हैं। ये सब उन्हें बाल पत्रिकाओं, बाल विज्ञान पत्रिकाओं में बड़ी सहजता से उपलब्ध हो जाते हैं। यही कारण है कि एक ओर जहाँ बच्चे पाठ्य-पुस्तकों के प्रति अरूचि दिखाते हैं वही बाल पत्रिकाओं, कॉमिक्स आदि को पढ़ने के प्रति सहज आकर्षण दिखाते हैं। अतः हमारा दायित्व हो जाता है कि हम उनके इस आकर्षण का उपयोग कर पढ़ने की आदत का विकास करें।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

1. छात्रों में पढ़ने की आदत की स्थिति ज्ञात करना।
2. सामान्य अध्ययन के विषय में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत ज्ञात करना।
4. बाल पत्रिकाओं के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत की पश्चात् स्थिति ज्ञात करना।
5. पढ़ने की आदत में परिवर्तन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)-प्रस्तुत शोध के लिए निर्मित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों के पढ़ने की आदतों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
2. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों के पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
4. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
5. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा पढ़ने की आदत में सह संबंध नहीं पाया जायेगा।
6. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत में पूर्व एवं पश्चात परीक्षण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
7. साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा छात्रों की पढ़ने की आदतों में सह संबंध नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) - प्रस्तुत शोध के लिए परिसीमन निम्नानुसार है -

1. स्तर - कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत छात्र-छात्राएँ।
2. शैक्षिक उपलब्धि - विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषय।
3. क्षेत्र – (क) शहरी – नगर निकाय के अंतर्गत की शालाएँ
   (ख) ग्रामीण- ग्राम पंचायत के अंतर्गत की शालाएँ

- **शोध प्रक्रिया (Research Process) - •** शोध विधि (Research Method) - प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में इंटरमीडिएट स्तर पर ग़ाज़ियाबाद के इंदिरापुरम क्षेत्र और भोपुरा क्षेत्र विकास खण्ड के दो विद्यालयों के 160 विद्यार्थियों (80 बालक, 80 बालिकाएँ – प्रति शाला 40 बालक, 40 बालिकाएँ) का चयन उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से गया। विद्यार्थियों के दो समान समूह (प्रायोगिक व नियंत्रित) निर्मित किए गए।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया -

1. पढ़ने की आदत परीक्षण (Reading Habit Test) – इस परीक्षण का निर्माण Jamnalal Bayti and Pushpa Sodhi Reading Test (R.T.) Hindi meant for 11 to 15 years school going children of both sexes.
2. शैक्षणिक उपलब्धि मापनी (स्वनिर्मित)।
3. बाल पत्रिकाओं पर आधारित प्रश्नावली (स्वनिर्मित) ।

चर (Variables)- प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया -

1. स्वतंत्र चर – बाल पत्रिकाएँ (साहित्यक एवं विज्ञान संबंधी)
2. आश्रित चर – पढ़ने की आदत (Reading Habit)
3. सह-चर - लिंग एवं स्थान।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध और उसकी सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

(a) नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	ग्रामीण	40	23.8	9.63	78	6.49	sp<0.01
2.	शहरी	40	35.2	10.1			

सारिणी क्रमांक – 01

(b) प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	ग्रामीण	40	24.8	8.50	78	7.39	sp<0.01
2.	शहरी	40	37.30	7.08			

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट है पढ़ने की आदत के संबंध में क्षेत्र के आधार पर नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों समूहों में ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए मध्यमान क्रमशः 23.88 व 24.38 तथा शहरी विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 35.20 व 37.30 पाया गया। t का मान 6.49 व 7.39 पाया गया जो कि 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः .01 विश्वास स्तर पर नियंत्रित तथा प्रायोगिक समूहों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के मानों में सार्थक अन्तर पाया गया। परिणाम के अनुसार विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर क्षेत्र का प्रभाव पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत होती है। पुष्टि – यादव, कुमारी कांति (2008) के शोध अध्ययन में भी इस प्रकार का परिणाम पाया गया था।

परिकल्पना क्रमांक - 02

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 02 (a)

नियंत्रित समूह के छात्र - छात्राओं की पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	छात्राएँ	40	32.8	14.5	78	1.11	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2.	छात्र	40	29.80	9.99			

सारणी क्रमांक – 02 (b)

प्रायोगिक समूह के छात्र - छात्राओं की पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	छात्राएँ	40	31.3	10.1	78	0.48	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2.	छात्र	40	30.45	10.7			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्रों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 29.80 एवं 30.45 है जिसकी तुलना में छात्राओं के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 32.8 एवं 31.3 पाया गया। df 78 पर t का मान 1.11 तथा 0.48 है, जो .05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.96 से कम है। अतः नियंत्रित व प्रायोगिक दोनों समूहों के छात्र-छात्राओं की पढ़ने की आदत के संबंध में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना-02 स्वीकृत होती है क्योंकि नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया। पुष्टि – लिण्डा बी. गेमब्रेल (1996) के शोध अध्ययन में इस प्रकार का परिणाम पाया गया ।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03 (a)

नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	ग्रामीण	40	14.15	3.56	78	1.24	0.01 विश्वास स्तर पर NS
2.	शहरी	40	15.43	5.44			

नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 14.15 व 15.43 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 3.56 व 5.44 है। गणना से प्राप्त t मान 1.24 है जो कि .01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.59 से कम है अर्थात् नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया ।

सारिणी क्रमांक – 03 (b)

प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	ग्रामीण	40	18.3	3.44	78	3.53	sp<.01
2.	शहरी	40	22.43	5.88			

प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों का माध्य क्रमश: 18.3 व 22.43 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 3.44 व 5.88 है। t मान 3.53 पाया गया जो कि .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः सार्थक अंतर पाया गया। अतः प्रायोगिक समूह के लिए परिकल्पना – 03 अस्वीकृत होती है। पुष्टि – यादव, कुमारी कांति (2008) के शोध अध्ययन में इस प्रकार का परिणाम पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 04

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 04 (a)

नियंत्रित समूह के छात्र - छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	छात्र	40	14.2	4.68	78	0.95	NS
2.	छात्राएँ	40	14.74	4.70			0.01 विश्वास स्तर पर

सारिणी क्रमांक – 04 (b)

प्रायोगिक समूह के छात्र - छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1.	छात्र	40	20.69	6.19	78	0.86	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2.	छात्राएँ	40	20.54	4.01			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों ही समूहों में छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक का माध्य क्रमशः 14.2 व 14.74 तथा 20.69 व 20.54 है, प्रमाप विचलन क्रमशः 4.68 व 4.70 तथा 6.19 व 4.01 है। t मान क्रमशः 0.95 एवं 0.86 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर t के सारणी मान से कम है। इस प्रकार दोनों ही समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना - 04 policea gqbZA पुष्टि – प्राप्त परिणाम लिण्डा बी. गेमब्रेल (1996) के शोध परिणामों के अनुकूल है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा पढ़ने की आदत में सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 05 (a)

नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह-संबंध r	परिणाम	स्तर
1.	पढ़ने की आदत	80	29.88	+0.56	धनात्मक	मध्यम
2.	शैक्षिक उपलब्धि	80	15.13			

सारिणी क्रमांक – 05 (b)

प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह-संबंध r	परिणाम	स्तर
1.	पढ़ने की आदत	80	52.93	+0.56	धनात्मक	मध्यम
2.	शैक्षिक उपलब्धि	80	30.01			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के माध्य क्रमशः 29.88 व 15.13 तथा 52.93 व 30.01 है तथा सह संबंध गुणांक क्रमशः +0.45 तथा +0.56 है, जो कि मध्यम धनात्मक स्तर का है अर्थात् पढ़ने की आदत उच्च होने पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पाई गई। पुष्टि – प्राप्त परिणाम से मिलते-जुलते परिणाम Holtzman, W.H. (1954) एवं सेन. बरात कल्पना (1992) के शोध में भी पाया गया है।

परिकल्पना क्रमांक - 06

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 06 (a)

नियंत्रित समूह में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत के संबंध में पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक	df	t मान	सार्थकता
1.	पूर्व परीक्षण	40	35.1	10.19	78	1.37	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2.	पश्च परीक्षण	40	35.9	9.18			

नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों के प्राप्तांकों पर t मान 1.37 है जो .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है इसलिए सार्थक अंतर नहीं है। अतः नियंत्रित समूह के संदर्भ में परिकल्पना – 06 स्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक – 06 (b)

प्रायोगिक समूह में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने कीआदत पर पूर्व एवं पश्चात परिक्षण के प्राप्तांको का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक	df	t मान	सार्थकता
1.	पूर्व परीक्षण	40	37.30	7.08	78	6.41	sp<.01
2.	पश्च परीक्षण	40	46.88	6.41			

प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों के प्राप्तांकों पर t मान 6.41 है जो .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है इसलिए सार्थक अंतर है। अतः प्रायोगिक समूह के संदर्भ में परिकल्पना – 06 अस्वीकृत हुई। पुष्टि – प्राप्त परिणाम ICSSR Project Devrajan (1992) के शोध अध्ययन के अनुकूल है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

"साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत में सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 07

साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह संबंध df	t मान	स्तर
1.	बाल पत्रिका परीक्षण	80	24.93	+0.53	धनात्मक	मध्यम
2.	पढ़ने की आदत	80	50.29			

बाल पत्रिकाओं एवं पढ़ने की आदत के बीच सह संबंध गुणांक पर आधारित प्राप्तांक +0.53 है जो कि मध्यम धनात्मक सह संबंध स्तर को दर्शाता है। अर्थात् बाल पत्रिकाओं के उपयोग से पढ़ने की आदत में सुधार एवं वृद्धि होती है। अतः परिकल्पना - 07 अस्वीकृत हुई। पुष्टि – प्राप्त परिणाम से मिलते-जुलते परिणाम सेटी निशि, चिकारा सुधा (1993) एवं शुक्ला, कामता प्रसाद (2005) के शोध में पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध हेतु संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदतों में अन्तर पाया गया।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत उच्च पायी गयी।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्र एवं छात्राओं में पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में पढ़ने की आदत लगभग समान पायी गयी।
4. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया। किन्तु प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने पर शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण की तुलना में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त होती है।
5. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया अर्थात छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान होती है।
6. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। यह स्पष्ट है, कि पढ़ने की आदत के कारण शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होना संभव है।
7. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत में पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों में अन्तर नहीं पाया गया किन्तु प्रायोगिक समूह में अंतर पाया गया। बाल पत्रिकाओं के उपयोग से पढ़ने की आदत का विकास हुआ।
8. साहित्यिक एवं ज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। यह प्रमाणित होता है कि बाल पत्रिकाओं के द्वारा छात्रों के पढ़ने की आदत में सुधार लाया जा सकता है।
9. बाल पत्रिकाओं के कक्षागत उपयोग एवं इसके प्रति छात्रों को अनुप्रेरित करने के प्रयास पढ़ने की आदत में वृद्धि करते हैं।

सुझाव (Suggestions) - शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालयों के पुस्तकालय में साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं को नियमित रूप से उपलब्ध कराते हुए विद्यालयों को उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. पालक भी बच्चों के साथ बाल पत्रिका पढ़ते हुए परिवार में उस पर चर्चा भी करें। इससे बच्चों में पढ़ने के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण होगा।
3. साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाएं शासन एवं समाज द्वारा निःशुल्क या कम खर्च में बच्चों तक सरलता पूर्वक उपलब्ध करायी जानी चाहिए।
4. धारावाहिक रूप से गतिविधियों, कहानियों एवं नाटकों के प्रकाशन से बच्चों में पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ने के प्रति रूझान बढ़ने से उनका संज्ञानात्मक विकास होगा।

संदर्भ (References) -

1. बधेका, गीजू भाई (2003): बाल शिक्षण जैसा मैंने समाझा, अंकित प्रकाशन, जयपुर।
2. भारती, जय प्रकाश: भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, ठाकुर एंड संस, दिल्ली।
3. इंदिरा, के. (1992): "नए साक्षरों की पढ़ने की रुचि और अध्ययन की आदतों का एक अध्ययन।" एम.फिल, एडु. श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय शिक्षा अनुसंधान का 5वां सर्वेक्षण, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, खंड-2, पृ.886।
4. यादव, कु. कांति (2007-08) "बच्चों की पत्रिकाओं के अध्ययन की आदतों और युवाओं की भाषाई क्षमता पर प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।